Chaudhry Ranbir Singh, a brilliant man of sterling qualities in character of head and heart, devoted his energies for taking the cause of freedom movement to new heights in the region and unshackle rural economy of discriminatory policies tilting in favour of industry and commerce at a time when country needed most to be free from hunger and destitution, while self reliance was the prime national necessity.

He became the irrepressible voice of the voiceless truly at the national and state forums of highest political importance. Restless and devoted as he was both during freedom struggle and later during the phase of national development after the country was free from lethargy of colonial bondage. He adopted Gandhian creed that was laced with the legacy of freedom movement and culture of the struggling peasantry.

Chaudhry Sahib came from a known peasant family of good social standing in the area having rich traditions. He loved his roots; bond with native land of Haryana was emotional while the national vision of a statesman remained firm with him by conviction. He worked for both zealously; while voicing the local perspective remained always national.

He was clear about his role and gave voice to it, like:

"I am a villager, born and bred in a farmer's house. Naturally I have imbibed its culture. I love it. All the problems connected with it fill my mind. I think that in building the country villagers should get their due"...

कर्म पथ के अथक पथिक...

''मैं एक देहाती हूँ, किसान के घर पला हूँ और परवरिश पाया हूँ। कुदरती तौरपर उसका संस्कार मेरे ऊपर है और उसका मोह उसकी सारी समस्याएँ आज मेरे दिमाग में हैं।''

चौधरी रणबीर सिंह देहात की मिट्टी और संस्कृति में रचे-बसे थे। वे चाँदी की चम्मच मुँह में लेकर पैदा नहीं हुए, जो पाया कर्म से हासिल किया। हरियाणा में रोहतक जिले के सांघी गाँव में एक साधारण किसान परिवार में जन्म हुआ। पालन-पोषण-शिक्षण आदि सब साधारण साँचे में ही हुआ। संस्कार, सोच और संकल्प की त्रिवेणी ने उनमें स्वाभिमान, संघर्ष, सादगी और राष्ट्रभक्ति का अद्भूत संचार किया। परिणामस्वरूप, वे साधारण से असाधारण बनने की डगर पर निरंतर अग्रसर होते चले गए।

'स्वराज' के स्वर को बुलन्द करने के लिए सर्वस्व न्यौछावर करने का अटूट-संकल्प कोई सामान्य घटना नहीं थी। जेलों की खाक और नजरबन्दी का अभिशाप सरलता से स्वीकार करना, कदापि सहज नहीं हो सकता। महात्मा गाँधी जी के जीवन मूल्यों को समेटते हुए हर चुनौती को स्वीकार किया। आपसी सौहार्द और भातृ-भावना को बचाने के लिए अभेद्य कवच बने। राष्ट्र को नयी दिशा देने के लिए संविधान निर्माण में उल्लेखनीय भूमिका निभाना, कोई साधारण काम नहीं था। सड़क से लेकर संसद तक स्वराज की पुकार, ग्रामीण भारत की हुंकार को उसकी मंजिल तक पहुंचाना और सात सदनों में आम आदमी का प्रखर प्रहरी बनना कोई सामान्य कर्मठता का विषय नहीं हैं। सच्चे कर्म पथ का अथक पथिक बनना और एक आम आदमी, किसान, मजदूर, दलित, पिछड़े एवं असहाय जन के साथ खड़ा होकर संघर्ष करना किसी साधारण व्यक्तित्व की निशानी नहीं हो सकती।

इन सब असाधारण और अनुकरणीय अनगिनत मिसालों के साक्षी बने स्व. चौधरी रणबीर सिंह। साधारण से असाधारण व्यक्तित्व बनने वाले ऐसे महापुरूष को नमन!

''मेरी राजनीति हमेशा बेदाग थी और मैंने इसे कभी गंदा नहीं होने दिया। राष्ट्र और मानवता के लिए नि:स्वार्थ सेवा ही मेरे जीवन का लक्ष्य था।''

–रणबीर सिंह

चौधरी रणबीर सिंह शोधपीठ

महर्षि दयानंद विश्वविद्यालय, रोहतक

चौधरी रणबीर सिंह

Chaudhry Ranbir Singh

जन्म : 26 नवम्बर, 1914

निधन : 01 फरवरी, 2009